इकाई 19 अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सिद्धान्त मण्डल व षड्गुण

इकाई की रूपरेखा

19.0 उद्देश्य

19.1 प्रस्तावना

19.2 मंडल सिद्धांत

19.3 राजमंडल–मूल प्रकृति

19.4 द्रव्य प्रकृति

19.5 अष्ट अन्य प्रकृति

19.6 सारांश

19.7 शब्दावली

19.8 बोध प्रश्न/अभ्यास प्रश्न

19.9 बोध प्रश्न/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

19.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

19.0 उद्देश्य

- इस इकाई का उद्देश्य है भारतीय राजनीतिक चिन्तन में अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के विषय में मण्डल सिद्धान्त का अध्ययन करना।
- इससे आप यह जानेंगे कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अपने देश के हितों की रक्षा कैसे करनी चाहिये।

19.1 प्रस्तावना

भारतीय राजनीतिक चिंतन में अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों पर गंभीर चर्चा की गई है। प्राचीन व मध्यकाल में देश प्रायः छोटे राज्यों में विभक्त था जिनकी स्थानीय प्रशासकों के आक्रमणों व युद्धों के कारण सीमाएँ निरन्तर बदलती रहती थीं। दूसरी ओर अर्थशास्त्र जैसे ग्रन्थों में दूर पास के सब राज्यों को अपने अधीन करने वाले सम्राटों को आदर्श बनाया गया है। अतः जहाँ अनेक राजा विस्तारवादी नीति अपनाते थे वहीं प्रत्येक राज्य के लिये विस्तारवादी राजाओं से बचना आवश्यक था। अतः चाहे अनचाहे प्रत्येक राज्य के लिये आवश्यक था कि वह आस पास के व दूर के सब राज्यों पर नजर रखे तथा प्रतिरक्षात्मक या आक्रामक नीति के अनुरूप सब देशों से संबंध बनाये ताकि आवश्यकता होने पर उसकी सहायता करने वाले मित्र देशों की एक लंबी शृंखला तैयार हो सके।

यह सिद्धान्त का आज भी बहुत सार्थक है। आज भी वैश्विक राजनीति में अपनी रक्षा व अनेक क्षेत्रों में सहायता के लिये अन्य देशों से मैत्री का बहुत महत्त्व है। आज भी विश्व में अनेक देश हैं जो अपना वर्चस्व बढ़ाना चाहते हैं तथा उसके लिये अन्य देशों को हानि पहुँचाने या उन्हें अपने प्रभाव में लाने का प्रयास कर रहे हैं। उनके प्रति उचित नीति बनाने में मण्डल सिद्धान्त से बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

19.2 मण्डल सिद्धान्त

मण्डल शब्द का अर्थ है चक्र या घेरा। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सन्दर्भ में इसका अर्थ है राजमण्डल अर्थात् राजा या राज्यों का चक्र या घेरा। राज्यों के समुदाय में अनेक राज्य ऐसे होते हैं जो दूसरों की भूमि तथा अन्य संसाधनों को हथियाने या अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने की होड़ में लगे रहते हैं। जैसे वर्तमान सन्दर्भ में अमरीका, रूस व चीन विश्व के हर क्षेत्र में अपनी ताकत बढ़ाने में लगे हैं। पहले विश्व दो गुटों में विभक्त था तो अब चीन तीसरा गुट बनाने में संलग्न है। ये देश अन्य देशों को अपने प्रभाव में लाने या रखने के लिये साम, दान, दण्ड व भेद – हर नीति अपनाते हैं।

इससे आप यह समझिये कि हर देश को न चाहकर भी, अपने हित की रक्षा के लिये इस राजनीति में फँसना पड़ता है। भारत ने शीत युद्ध के दिनों में गुट निरपेक्षता की नीति अपनाई थी और वह रूस और अमरीका – दोनों से अच्छे संबंध चाहता था। किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अन्य देशों के अपने अपने हित होते हैं। अतः इनसे भारत के संबंध लगातार बदलते, बनते और बिगड़ते रहे हैं। यही मण्डल सिद्धान्त का सार है।

हर जागरूक देश को अपने चारों ओर दूर व पास के सब देशों की हर गतिविधि पर ध्यान देना चाहिये और यह देखते रहना चाहिये कि कब और कौन उसके शत्रु या शत्रुओं के मित्र या शत्रु हैं, और कौन उसके मित्र या मित्रों के मित्र या शत्रु हैं । अपनी शक्ति की वृद्धि के लिये व शत्रु को टक्कर देने के लिये योग्य देशों को अपना मित्र बनाने का निरन्तर प्रयत्न करना चाहिये। इस खेल में शत्रु व उसके मित्र देशों को अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न भी करना चाहिये।

19.3 राजमण्डल – मूल प्रकृति

मण्डल सिद्धान्त में बारह प्रकार के देशों का उल्लेख है। अतः इसे द्वादश राजमण्डल कहा जाता है। जो राजा इन सबको अपने अनुकूल बना लेता है वह राजचक्रवर्ती या चक्रवर्ती कहलाता है। इनमें चार राजा मुख्य हैं। मनुस्मृति में इन्हें मण्डल का मूल कहा है क्योंकि अन्य आठ राजा इनके चारों ओर घूमते हैं। ये चार हैं – विजिगीषु, अरि या शत्रु, मध्यम व उदासीन। मनु कहते हैं कि प्रत्येक राजा को इन चार की गतिविधियों पर दृष्टि रखनी चाहिये।

मध्यमस्य प्रचारं च विजिगीषोश्च चेष्टितम।

उदासीनप्रचारं च शत्रोश्चौव प्रयत्नतः॥ ७.१५५

एताः प्रकृतयो मूलं मण्डलस्य समासतः।

अष्टौ चान्याः समाख्याता द्वादशैव तु ताः स्मृताः॥ ७.१५६

इनमें भी विजिगीषु पूरे राजचक्र की धुरी है। विजिगीषु का अर्थ है विजय का इच्छुक राजा। वह अन्य देशों को अपने अधीन करना चाहता है। इसे आज की भाषा में विस्तारवादी या उपनिवेशवादी राज्य कहा जा सकता है। कौटल्य के अनुसार वही राजा विजिगीषु हो सकता है जो राजा के सभी निजी गुणों अर्थात् आत्मसंपद् तथा द्रव्यसंपद् अर्थात् सब संसाधनों से युक्त हो। वही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अधिष्ठान अर्थात् मूल आधार बन जाता है – 'राजा आत्मद्रव्यप्रकृतिसम्पन्नो नयस्याधिष्ठानं विजिगीषुः (अर्थशास्त्र – ६.२.१३)'

जिस राज्य की सीमा विजिगीषु के सीमा से सटी हो वह अरि कहलाता है। अरि का अर्थ है – जिस पर विजिगीषु चढ़ाई करे। जब विजिगीषु अपनी विजययात्रा पर निकलता है तो सबसे पहले वह अपने पड़ोसी पर ही आक्रमण करता है या उसे अपने अधीन करता है। अतः विजिगीषु का पड़ोसी देश उसका सबसे पहला अरि होगा। अर्थशास्त्र के अनुसार – 'तस्य समन्ततो भूम्यनन्तरा अरिप्रकृतिः' अर्थात् विजिगीषु के राज्य के चारों ओर से सटे राज्य अरि प्रकृति कहलाते हैं। यहाँ समन्ततः शब्द महत्त्वपूर्ण है अर्थात् विजिगीषु अपने राज्य से निकलकर किसी भी दिशा में जा सकता है, अतः चारों ओर के राज्य ही उसके लिये अरि होते हैं।

मध्यम वह राज्य है जो अरि एवं विजिगीषु दोनों के निकट हो, दोनों से इतना अधिक शक्तिशाली हो कि ये दोनों मिल भी जाएँ तो वह इन पर भारी रहे। वह अरि व विजिगीषु की आपसी राजनीति में हस्तक्षेप नहीं करता पर दोनों ही उसे अपने पक्ष में करने का प्रयास करते हैं।

उदासीन वह राजा है जो अरि, विजिगीषु और मध्यम तीनों से दूर हो पर तीनों से अधिक शक्तिशाली हो। वह सामान्यतः इस तीनों की आपसी राजनीति में हस्तक्षेप नहीं करता। किन्तु अरि व विजिगीषु उसे अपने पक्ष में करने का प्रयास करते रहते हैं।

मुख्यतः अरि ही विजिगीषु से अपनी रक्षा के लिये मध्यम व उदासीन से मित्रता करने का प्रयत्न करता है। तथा विजिगीषु उन्हें बाहर रखने का प्रयास करता है। इसी संघर्ष के चारों ओर देशों की राजनीति घूमती है।

जो देश इनकी राजनीति से बाहर रहना चाहते हैं उन्हें भी विजिगीषु पर विशेषतः नजर रखनी चाहिये ताकि कभी उसकी कुदृष्टि उन पर पड़े तो वे हर स्थिति का सामना करने के लिये तैयार हों। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि कोई भी राज्य कभी भी किसी भी भूमिका में सामने आ सकता है। अतः सब पर ही दृष्टि रखनी चाहिये।

19.4 द्रव्य प्रकृति

इस प्रसंग में द्रव्य प्रकृति की चर्चा आवश्यक है। प्रत्येक राजा को अपनी व अपने मित्र देशों की पाँच प्रकार की द्रव्य प्रकृति को समृद्ध करते रहना चाहिये। मित्र देशों को सक्षम बनाना भी अन्ततः अपने हित में है क्योंकि सबल मित्र ही समय पर नाना प्रकार से सहायता कर सकते हैं। पुनः शत्रु व उसके मित्रों की द्रव्य प्रकृति को नुकसान पहुँचाने का यत्न करते रहना चाहिये। ये द्रव्य प्रकृतियाँ हैं – अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोश व बल। मनुस्मृति में इनका परिगणन इस पद्य में किया गया है –

'अमात्यराष्ट्रदुर्गार्थदण्डाख्याः पञ्च चापराः।'

इन सब की शक्ति से ही राज्य शक्तिशाली बनता है। योग्य अमात्य, समृद्ध, सुशासित व सुरक्षित राष्ट्र, सुदृढ व साधन संपन्न दुर्ग, समृद्ध कोश व शक्तिशाली सेना – इनके बिना कोई देश अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के दबाव को नहीं झेल सकता। इनमें से एक तत्त्व भी कमजोर हो तो कोई विजिगीषु नहीं हो सकता। किसी एक भी तत्त्व के कमजोर होने से राज्य अपने शत्रु के आगे कमजोर पड़ सकता है। बल्कि अर्थशास्त्र आदि राजनीति के ग्रन्थ तो स्पष्ट कहते हैं कि किसी देश पर आक्रमण करने का सबसे उत्तम समय तब है जब उसपर किसी द्रव्य प्रकृति के कमजोर होने से मुसीबत

आई हो। दो देशों के बीच मध्यम या उदासीन की भूमिका भी वही निभा सकता है जो इन सब दृष्टियों से मजबूत हो।

19.5 अष्ट अन्य प्रकृति

चार मूल राजप्रकृतियों के अतिरिक्त आठ अन्य प्रकार के राजा राजमण्डल का भाग होते हैं। इनमें से कुछ विजिगीषु के पक्ष के होते हैं और कुछ अरि के पक्ष में। इन का रहस्य यह है कि अरि व विजिगीषु दोनों को अपने अपने साथी देशों की एक शृंखला बनानी होती है। अरि को विशेषतः यह ध्यान रखना चाहिये कि विजिगीषु के मित्र देश कौन से है और विजिगीषु को अरि के मित्र देशों की टोह रखनी चाहिये तथा दोनों को एक दूसरे के मित्रों की काट के लिये अपने लिये उपयुक्त देशों से मित्रता करनी चाहिये। दोनों को समझना चाहिये कि दूसरा पक्ष अन्य देशों को प्रभावित करने का प्रयास अवश्य करेगा। अतः अरि को विजिगीषु के मित्रों का मुकाबला करने के लिये अपने मित्रों को तैयार करना चाहिये और विजिगीषु को अरि के साथियों को दबाने की कोशिश करनी चाहिये। दोनों को अपने राज्य की चारों दिशाओं में मित्रों की यह श्रृंखला बनानी चाहिये। इस प्रकार चारों ओर मित्रों व शत्रुओं का घेरा तैयार हो जाएगा। इसी घेरे को राजमण्डल कहा जाता है।

विजिगीषु को आगे बढ़ने की दिशा में तथा पीछे की दिशा में अपने मित्रो की योजना करनी चाहिये। अरि को विजिगीषु की चालें देखकर अपने साथी आगे व पीछे की ओर तैयार करने चाहिये।

इसे निम्नलिखित चित्र की सहायता से समझा जा सकता है। इसमें लाल रंग में अरि व उसके मित्रों को दिखाया गया है तथा विजिगीषु व उसके मित्र हरे रंग में अंकित हैं। मध्यम व उदासीन पीले रंग में अंकित हैं।

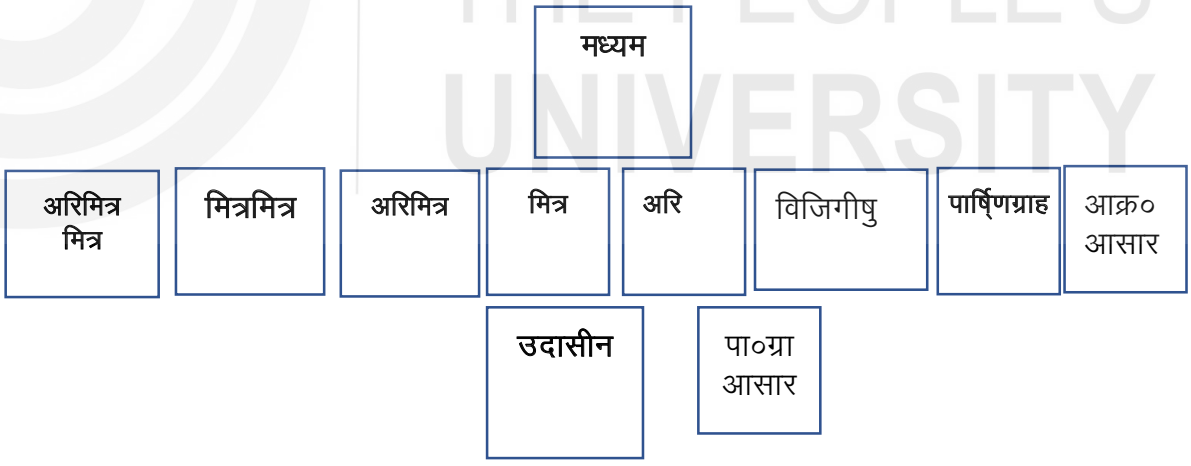

अर्थशास्त्र में इनका परिगणन इस प्रकार किया गया है 'दृमित्रम, अरिमित्रम, मित्रमित्रम, अरिमित्रमित्रम् च आनन्तर्येण भूमीनां प्रसज्यन्ते पुरस्तात् । पश्चात् पार्णिग्राहः, आक्रन्दः, पार्ष्णिग्राहासारः, आक्रन्दासारः॥'

अर्थात् सामने की ओर सीमा से सटे होते हैं – मित्र, अरिमित्र, मित्रमित्र और अरिमित्रमित्र । पीछे होते हैं – पार्णिग्राह, आक्रन्द, पार्ष्णिग्राहासार व आक्रन्दासार ॥

यदि विजिगीषु अरि पर आक्रमण करे तो अरि का मित्र पार्ष्णिग्राह पीछे से आकर विजिगीषु की एड़ी पकड़ ले। उससे बचने के लिये विजिगीषु पार्ष्णिग्राहासार की

भूमिका में अपने मित्र को पहले से तैयार रखे। अर्थात् वह पार्ष्णिग्राह से विजिगीषु को बचाने वाला है। उससे निपटने के लिये अरि आक्रन्द को अर्थात् जिसे मुसीबत में पुकारा जा सके, तैयार रखे। उसका मुकाबला करने लिये विजिगीषु आक्रन्दसार नामक अपने मित्र को तैयार रखे।

इसी प्रकार दूसरी दिशा में मित्रों की योजना यह है –

यदि विजिगीषु अरि पर आक्रमण करे तो विजिगीषु का मित्र दूसरी दिशा से अरि पर हमला कर दे और दोनों मिलकर अरि को दबा दें। विजिगीषु के मित्र से निपटने के लिये अरि का मित्र तैयार हो तो उसे दबाने के लिये विजिगीषु के मित्र का मित्र उससे निपपटने के लिये अरि को अरि–मित्रदृमित्र को पहले से ही तैयार कर लेना चाहिये। इस प्रकार दोनों पक्षों को दोनों दिशाओं मे अपने अपने साथी राज्यों को सहायता के लिये तैयार करना होता है।

यह काम सरल नहीं है। इसके लिये राजा को साम, दान. दण्ड व भेद की राजनीति करनी पड़ती है। मनुस्मृति में लिखा है –

तान् सर्वानभिसन्दध्यात् सामादिभिरुपक्रमैः।

व्यस्तैश्चौव समस्तैश्च पौरुषेण नयेन च॥ मनुस्मृति ७. १५६

अर्थात् उन सब प्रकार के राजाओं को साम आदि उपायों से, नीति से या पराक्रम से अपने प्रभाव में रखना चाहिये। साम का अर्थ है शान्ति पूर्ण उपाय या समझाना बुझाना। दान का अर्थ है कोई किला, धन, हाथी घोड़े आदि देकर शत्रु को शान्त करना। भेद का अर्थ है शत्रु पक्ष में फूट डालना। दण्ड का अर्थ है बल का प्रयोग अथवा युद्ध। मनुस्मृति ने कहा है कि जहाँ तक हो साम, दान या भेद से शत्रु पर विजय प्राप्त करनी चाहिये युद्ध से नहीं।

साम्ना दानेन भेदेन समस्तैरथवा पृथक।

विजेतुं प्रयतेतारीन्न युद्धेन कदाचन॥

यह राजनीतिक व्यवस्था स्थाई नहीं होती है। इसलिये हर समय कूटनीति का खेल चलता ही रहेगा। पुनः जैसा ऊपर कहा गया है – प्रत्येक राजा को अपने मित्रों को हर प्रकार से पुष्ट करना होगा और शत्रुपक्ष को हर तरह से कमजोर करने की लगातार कोशिश करनी होगी। अतः मण्डल सिद्धान्त का असली अर्थ है अपने देश के हित की रक्षा के लिये छल–बल सहित हर कूटनीतिक पैंतरेबाजी निरन्तर करते रहना।

19.6 सारांश

भारतीय राजनीतिक चिन्तन में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है – मण्डल सिद्धान्त। इसका सार यह है कि हर देश को विश्व की राजनीति में सावधानी से रहना चाहिये। अनेक देशों के मंसूबे ठीक नहीं होते। वे अन्य देशों को छल–बल से अपने प्रभाव में या अपने अधीन रखना चाहते हैं। अनेक देश विस्तारवादी नीति पर चलकर अन्य देशों को हड़प लेने का प्रयास करते हैं। इसलिये एक जागरूक देश को पास व दूर के हर देश पर नजर रखनी चाहिये और अपने हर शत्रु का मुकाबला करने के लिये अपने मित्र देशों को पहले से ही तैयार रखना चाहिये। इसके लिये उसे अरि, विजिगीषु, मध्यम व उदासीन – इन चार की हर गतिविधि पर ध्यान देना

चाहिये। इनके अतिरिक्त अपने चारों ओर आठ अन्य राजाओं की श्रृंखलादृष्टि रखनी चाहिये। मूलतः यह निर्देश विजिगीषु की चालों से स्वयं को बचाने के लिये दिये गये हैं। इन पर चल कर कोई भी देश अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के दबावों से बच सकता है और अपनी सुरक्षा कर सकता है। यदि कोई राज्य स्वयं विस्तारवादी है तो वह भी इस नीति पर चलकर अपने राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति कर सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त यह है कि हर देश स्वयं को व अपने मित्र देशों को हर तरह से पुष्ट बनाये व शत्रु तथा उसके मित्रों को लगातार कमजोर करे। अतः मण्डल सिद्धान्त का वास्तविक अभिप्राय है अपने देश की रक्षा के लिये अन्य देशों के साथ ऐसे संबंध बनाना जिनसे समय आने पर वे हर तरह की मदद के लिये तैयार रहें तथा ऐसे उपाय करना जिनसे शत्रु के मित्र न बनने पायें और बनें तो टूट जायें, न टूटें तो उन्हें साम, दान, दण्ड भेद या छल–बल द्वारा नियन्त्रण में रखा जाये।

19.7 शब्दावली

मण्डल – घेरा, राजाओं का घेरा

विजिगीषु – विस्तारवादी देश जो अन्य देशों को अपने अधीन करना चाहे

अरि – विजिगीषु के पड़ोसी देश

मध्यम – अरि व विजिगीषु का ताकतवर पड़ोसी जो निरपेक्ष हो

उदासीन – अरि, विजिगीषु व मध्यम से दूर स्थित पर अधिक शक्तिशाली देश

चक्रवर्ती – राजमण्डल पर शासन करने वाला राजा

19.9 बोध–अभ्यास प्रश्न

1. मण्डल सिद्धान्त के अनुसार मित्र देशों का क्या महत्त्व है ?
2. अपने मित्र देशों को शक्तिशाली बनाने का क्या महत्त्व है ?
3. विश्व के सब देशों की गतिविधियों पर नजर रखने का क्या महत्त्व है ?
4. विजिगीषु के पड़ोसी देश उसके पहले अरि क्यों हैं?
5. शत्रु देश पर आक्रमण करने का उत्तम समय क्या बताया गया है ?
6. पाँच द्रव्य प्रकृतियाँ कौन कौन सी हैं ?
7. मण्डल सिद्धान्त में मूल चार प्रकृतियाँ क्या हैं ?
8. चार उपायों के नाम लिखिये।
9. भारत व चीन के संबंधों के संदर्भ में मण्डल सिद्धान्त की उपयोगिता समझाइये।

19.10 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. मित्र देश शत्रुओं के आक्रमण से रक्षा करते हैं तथा समय आने पर नाना प्रकार से सहायता करते हैं।
2. यदि मित्र देश शक्तिशाली होंगे तभी वे अवसर आने पर सहायता कर सकेंगे।
3. विश्व की राजनीति में सब देश अपने हित के अनुसार मित्र या शत्रु हो जाते हैं। अतः हर जागरूक देश को सबकी गतिविधियों पर दृष्टि रखनी चाहिये जिससे

समय रहते अन्य देशों के इरादों का पता चल जाये और राजा उचित उपाय कर सके।

4. जब विजिगीषु अन्य देशों को जीतने के लिये निकलता है तो सबसे पहले अपने पड़ोसी देशों पर ही आक्रमण करता है।

5. जब शत्रु देश की कोई द्रव्य प्रकृति बहुत कमजोर हो तब उस पर आक्रमण करना चाहिये।

6. पाँच द्रव्य प्रकृतियाँ हैं – अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोश व बल।

7. चार मूल प्रकृतियाँ हैं – विजिगीषु, अरि, मध्यम व उदासीन।

8. चार उपाय हैं – साम दान दण्ड व भेद।

9. आज चीन अपनी आर्थिक व सामरिक शक्ति के बल पर भारत के लिये खतरा बनता जा रहा है। उधर वह दक्षिण चीन सागर से प्रशान्त महासागर तक के देश चीन की नीतियों से आतंकित हो रहे हैं। इसलिये भारत ने जापान व आस्ट्रेलिया जैसे देशों से अपने संबंध सुदृढ किये हैं। आस्ट्रेलिया सहित चार देशों के समूह में शामिल होकर भारत ने चीन से मुकाबले के लिये अपनी गोलबन्दी की है। इस प्रकार दूर व पास के देशों के साथ मिलकर भारत चीन के प्रभाव को कम करने की योजना बना रहा है। इस प्रकार भारत मण्डल सिद्धान्त के अनुसार अपनी सुरक्षा के लिये मित्रों की शृंखला बना रहा है।

19.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. काणे पी०वी० – धर्मशास्त्र का इतिहास

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY